'अजातशत्रु' नाटक में मल्लिका की भूमिका पर प्रकाश डालें?

किसी भी ~~कथा~~ कथानक में लेखक एक ऐसे पात्र की सृष्टि करता है, जिसके माध्यम से वह जीवन और जगत के विषय में अपने व्यक्तिगत विचारों की अभिव्यक्ति प्रदान करता है। अजातशत्रु नाटक में मल्लिका का चरित्र इसी प्रकार का चरित्र है, जिसके माध्यम से ~~इसके~~ नाटककार जयशंकर प्रसाद ने अपनी कल्पना की आदर्श नारी का स्वरूप चित्रित किया है। वह एक ऐसी नारी पात्र है, जो कर्तव्य की बलिवेदी पर अपने व्यक्तिगत स्वार्थों की तिलांजलि दे देती है। यह जानते हुए भी कि उसके पति के प्राण हरण के लिए षड्यंत्रों की रचना हो चुकी है। वह हड़सानी की भाँति मातृभूमि की रक्षा को समर्पित सेनापति बन्धुल के मार्ग में अवरोध नहीं बनती। पति के वीरगति प्राप्त होने के पश्चात् भी, जब एक सामान्य स्त्री से शोक की अपेक्षा की जाती है। वह असाधारण धैर्य और स्वर्गिक प्रेरणा प्रदर्शित करती "अतिथि देवो भव" जैसे विशुद्ध आचरण से अनुप्राणित आनन्द और सारिपुत्र का आतिथेय धर्म का निर्वाह करती है।

नाटक के प्रथम अंक के अन्त दृश्य में विदूषक के एक स्वगत कथन से लगता है कि मल्लिका उसकी प्रेयसी रही है। परन्तु रंगमंच पर मल्लिका का प्रवेश कोसल-सेनापति बन्धुल की पत्नी के रूप में होता है। आलोच्य नाटक में उसके दो रूप दिखाई देते हैं- पहला - गरिमामयी पत्नी का और दूसरा समाज कल्याण और विश्व मैत्री को समर्पित देवी का।

मल्लिका एक आर्य पत्नी है। उसे अपने पति से, उसके प्रतिष्ठा से अनन्य प्रेम है। उसका पति भी उसकी इच्छापूर्ति करने के लिए पाँच सौ मल्लों को पराजित कर उसे पावा का अमृत जल पिलाकर लाता है। वह मल्लिका के हर इच्छा की पूर्ति करता है। परन्तु मल्लिका भी अपने कर्तव्य को कभी नहीं भूलती। वह अपना प्रेम सीमित रखती है।

महामाया उसे यह संवाद देती है कि उसके पति की हत्या करने हेतु उसको प्रेरित किया जा रहा है। वह उस पर विश्वास नहीं करती और स्वामिभक्त प्रजा होने के नाते वापस लौटने का संवाद प्रेषित नहीं करती, कहती है—— "राजा की आज्ञा से वह प्राण दे देना अपना कर्तव्य समझेगा – जब तक कि ~~स्वयं~~ स्वयं राजा राष्ट्र का द्रोही न प्रमाणित हो जाय।"

मल्लिका के शक्ति और धर्म का अलौकिक उदाहरण तब मिलता है जब उसे अपने पति की छलपूर्वक हत्या का संवाद मिलता है। ठीक उसी समय गौतम शिष्य आनन्द और आर्चाय सारिपुत्र उसके अतिथि होने वाले हैं। उसे अपने दिये हुए निमंत्रण का ~~सम्यक~~ स्मरण हो जाता है। वह असाधारण धर्म और अतुलित व्यावहारिकता का परिचय देती हुई आतिथेय धर्म का निर्वाह करती है। वह अपने अतिथियों को शान्ति पूर्वक भोजन करती है। उसके धैर्य की प्रशंसा करते हुए सारिपुत्र कहते हैं— "तुम्हारा धैर्य सराहनीय है। आनन्द, तुम इस मूर्तिमति धर्मपरायणता से कर्त्तव्य की शिक्षा लो।"

मल्लिका सचमुच देवी है। राजा प्रसेनजित उससे अपने कुकृत्यों के लिए क्षमा मांगने आते हैं। वह उन्हें बेशक फटकारती है परन्तु उसके मुख पर ईर्ष्या और प्रतिहिंसा के चिह्न दिखाई नहीं देते। वह शान्तिपूर्वक कौसल का परित्याग कर उसकी सीमा पर पर्णकुटी बनाकर रहने लगती है। उसके इस महिमामय चरित्र से महाराज प्रसेनजित के अतिरिक्त विरुद्धक, अजातशत्रु, दीर्घकारायण और शक्तिमती जैसे कुटिल पात्र भी सहज प्रभावित होते हैं। वह महाराज प्रसेनजित को क्षमा करने के पश्चात उसकी रक्षा भी करती है। अजातशत्रु से युद्ध में घायल होने के पश्चात वह उनकी सेवा करती है। उस समय उसका भांजा कारायण उसे मारने को कहता है।

जब अजातशत्रु क्रोध से आक्रान्त प्रसेनजित को मारने उसकी कुटिया तक आता है, तो वह भी मल्लिका

के क्षमाशील व्यवहार का दर्शन कर और उसकी शीतल वाणी सुनकर मुग्ध हो जाता है तथा शान्त होकर लौट जाता है। द्वितीय युद्ध में वह घायल विरुद्धक की सेवा करती है। वहाँ उसकी विश्वमैत्री की परीक्षा थी जिसमें वह उत्तीर्ण हुई। अन्त में प्रसेनजित के पास जाकर शक्तिमती और विरुद्धक को क्षमा कर देती है।

इस प्रकार मल्लिका के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के सिंहावलोकन के पश्चात् कहा जा सकता है कि वह एक पतिपरायण, स्नेह, करुणा, विश्वमैत्री, उदारता, आतिथ्य सेवा, त्याग और कर्तव्य परायणता से युक्त आर्य ललना है। वह बुद्ध युग के अनुकूल अनुरूप चरित्रशालिनी नारी है।

— :XOX: —